

Dr. Priti Ranjan

H.O.D history department

H.D jain college, ara

Notes for ug sem 5

हूण वंश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक, सांस्कृतिक उपलब्धियों का वर्णन करें।

भारतीय इतिहास में अल्पकालीन किंतु महत्वपूर्ण प्रभाव रखती हैं। हूण मूलतः मध्य एशिया से आए थे, जिन्होंने 5वीं-6वीं शताब्दी ई. में भारत पर आक्रमण किया। उन्होंने गुप्त साम्राज्य की शक्ति को कमजोर कर दिया, परंतु भारत की संस्कृति और समाज पर कुछ स्थायी प्रभाव भी छोड़े। आइए तीनों पक्षों से समझें –

1. राजनीतिक उपलब्धियाँ:

1. नए राज्य की स्थापना:

हूणों ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग (गांधार, पंजाब और राजस्थान) में अपना प्रभुत्व स्थापित किया। उनका सबसे प्रसिद्ध शासक **मिहिरकुल** था, जिसने कश्मीर और मालवा तक अपना साम्राज्य फैलाया।

2. गुप्त साम्राज्य का पतन:

हूण आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य की राजनीतिक एकता को तोड़ दिया। इससे उत्तर भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ, जिसने आगे चलकर क्षेत्रीय राज्यों की परंपरा को जन्म दिया।

3. राजनीतिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया:

हूणों के बाद राजनीतिक शक्ति का केन्द्र कमजोर हुआ और **स्थानीय राजाओं** तथा

सामंतों का प्रभाव बढ़ा। यह आगे चलकर भारतीय सामंतवाद (Feudalism) के विकास का आधार बना।

2. सामाजिक उपलब्धियाँ:

1. **नवीन जातीय तत्वों का समावेश:**

हूण मध्य एशिया के यायावर समुदाय थे। उनके भारत में बस जाने से भारतीय समाज में नये वंशीय और जातीय समूह जुड़ गए। धीरे-धीरे वे भारतीय समाज में आत्मसात हो गए।

2. **राजपूत वंशों का उदय:**

कई इतिहासकारों (जैसे वी.ए. स्मिथ और आर. सी. मजूमदार) का मत है कि हूणों के मिश्रण से आगे चलकर कुछ राजपूत वंशों (जैसे गुर्जर-प्रतिहार आदि) का गठन हुआ।

3. **सामाजिक कठोरता में वृद्धि:**

हूणों के आक्रमणों और अस्थिरता के कारण समाज में धार्मिक और सामाजिक रूढ़िवादिता बढ़ी। ब्राह्मणों का प्रभाव पुनः मजबूत हुआ और जातिगत विभाजन और कठोर हुए।

3. आर्थिक उपलब्धियाँ:

1. **व्यापारिक गतिविधियों पर प्रभाव:**

हूण आक्रमणों के कारण उत्तर-पश्चिमी व्यापार मार्ग (खासकर रेशम मार्ग) बाधित हुआ। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कमी आई।

2. **स्थानीय अर्थव्यवस्था का विकास:**

केंद्रीय शक्ति के पतन से स्थानीय प्रशासन और ग्राम-आधारित अर्थव्यवस्था मजबूत हुई। लोगों ने आत्मनिर्भरता की दिशा में काम किया।

3. **भूमि-दान प्रणाली का प्रसार:**

हूण काल में भूमि दान (भूमिदान या अग्रहारा प्रथा) की परंपरा और अधिक फैल गई। इससे सामंती आर्थिक ढाँचा विकसित हुआ जो बाद में मध्यकालीन भारत की नींव बना।

4. सांस्कृतिक प्रभाव (संक्षेप में):

- हूणों ने भारतीय संस्कृति को नष्ट नहीं किया, बल्कि धीरे-धीरे उसे स्वीकार किया।
 - मिहिरकुल पहले शिव का विरोधी था, पर बाद में शैव धर्म का अनुयायी बन गया।
 - उनकी कला और स्थापत्य शैली में मध्य एशियाई प्रभाव देखने को मिला।
-

निष्कर्ष:

हूण वंश ने भले ही भारत की एकता को कमजोर किया हो, परंतु उनके आगमन से भारतीय समाज में नई राजनीतिक संरचना, सामाजिक रूपांतरण और आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हुई। वे भारतीय इतिहास में संक्रमण काल (गुप्तोत्तर काल) के वाहक बने।